iFke d{kk

fVIi.kh

1

o.kZekyk

प्रिय शिक्षार्थी, इस पाठ में आप संस्कृत भाषा की वर्णमाला तथा वर्णों के उच्चारण के विषय में जानेंगे। आप स्वर, व्यंजन तथा उनके उच्चारण स्थानों के विषय में भी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

mís';

यह पाठ पढने के बाद आप सक्षम होंगे:

- संस्कृत वर्णमाला को समझ पानें में;
- माहेश्वर सूत्रों को जान पानें में;
- स्वर और व्यंजन के बीच अंतर कर पानें में; और
- वर्णों का उच्चारण स्थान जान पाने में।

iFke d{kk

fVIi.kh

1.1 o.k

वर्ण दो प्रकार के होते हैं – स्वर तथा व्यंजन। स्वर वर्णे के उच्चारण में किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं ली जाती है। नीचे स्वर वर्ण दिये जा रहे हैं–

(क) सामान्य स्वर–

अ,	आ,	इ,	ई,	उ,	ऊ,	ऋ

(ख) मिश्रित स्वर–

ए,	ऐ,	ओ,	औ,	ॠ,	ऌ

व्यंजन वर्णो के उच्चारण में स्वर वर्णो की सहायता ली जाती है। नीचे व्यंजन वर्ण दिये गये हैं–

Li'k o.k&

क्	ख्	ग्	घ्	ङ्
च्	छ्	ज्	झ्	ञ्
ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्
त्	थ्	द्	ध्	न्
प्	फ्	ब्	भ्	म्

o.kZekyk

ikFke d{kk

fVIi.kh

vUr%LFk&

य्	र्	ल्	व्

Å"e&

श्	ष्	स्	ह्

इनके अलावा अनुसार (ं) और (:) व्यंजन वर्णमाला में न होते हुए भी वर्णो की तरह प्रयोग किये जाते हैं।

la;qDr O;atu&

क् + ष्	=	क्ष्
त् + र्	=	त्र्
ज् + ञ्	=	ज्ञ्

ये तीनों वर्ण भी वर्णमाला में प्रयोग किये जाते हैं।

1.2 ekgs'oj l=

नीचे 14 माहेश्वर सूत्र दिये गये है –

1. अ इ उ ण्।
2. ऋ लृ क्।
3. ए ओ ङ्।
4. ऐ औ च्।
5. ह य व र ट्।
6. ल ण्।
7. ञ म ङ ण न म्।
8. झ भ ञ्।
9. घ ढ ध श्।
10. ज ब ग ड द ष्।
11. ख फ छ ठ थ च ट त व्।
12. क प य्।
13. श ष स र् ।
14. ह ल्।

o.kZekyk

इन माहेश्वर सूत्रों से 43 प्रत्याहार बनाये गये हैं जिनका प्रयोग पाणिनीय व्याकरण में किया गया है। प्रत्याहार का अर्थ है संक्षेप में कहना। माहेश्वर सूत्रों में आदि और अन्त्य वर्ण मिलाकर जो प्रत्याहार बनते हैं उनके बीच में आदि वर्ण तथा सब अन्य वर्ण समावित् होते हैं। अन्तिम इत् संज्ञक वर्ण का समावेश नही किया जाता है। जैसे अच् प्रत्याहार में सभी स्वर तथा हल् प्रत्याहार में सभी व्यंज्जन समाहित हैं।

1.2 mPpkj.k LFkku

संस्कृत वर्णमाला के सभी वर्ण इन चौदह माहेश्वर सूत्रो से ही बने हैं। प्रत्ययों के क्रम में प्रत्येक सूत्र का आखिरी वर्ण नहीं माना जाता हैं। ये सभी स्वर तथा व्यंजन के रूप में विभक्त हैं।

Loj o.kZ ¼vp~ izR;kgkj½

अ	इ	उ	ऋ	लृ

ए	ओ	ऐ	औ

ये सभी स्वर अठारह 18 प्रकार के होते हैं। पहले ‘ह्रस्व’, ‘दीर्घ’ और ‘प्लुत’। ‘ह्रस्व अकार’, ‘दीर्घ अकार’, ‘प्लुत अकार’। इसके बाद फिर तीन प्रकार – ‘उदात्त’, ‘अनुदात्त’ और ‘स्वरित’। तथा इनमे भी दो विभाग – ‘अनुनासिक’ और ‘अननुनासिक’। इस तरह से ‘अ’, ‘इ’, ‘उ’ और ‘ऋ’ 18 प्रकार के तथा ‘लृ’ दीर्घ नहीं होने से 12

प्रकार का होता है। 'ए', 'ऐ', 'ओ' और 'औ' ह्रस्व नहीं होने से 12 प्रकार के होते हैं।

0;¥tu & ¼gy iR;kgj½ IHkh 0;¥tu ey :i I gyUr gkr gA

d ox &

क	ख	ग	घ	ङ

p ox &

च	छ	ज	झ	ञ

V ox &

ट	ठ	ड	ढ	ण

o.kekyk

iFke d{kk

fVIi.kh

r ox &

त	थ	द	ध	न

i ox &

प	फ	ब	भ	म

vUrLFk o.k &

य	व	र	ल	—

m'eo.k &

ष	श	स	ह	—

mPpkj.k LFkku

अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः।

इचुयशानां तालु।

ऋटुरषाणां मूर्धा।

लृतुलसानां दन्ताः।

उपूपध्मानीयानामोष्ठौ।

ञमङणनां नासिका च।

एदैतोः कण्ठ–तालु।

ओदौतोः कण्ठोष्ठम्।

वकारस्य दन्तोष्ठम्।

अयोगवाहा (यम–अनुस्वार–विसर्ग–जिह्वामूल–उपूपध्मानीय) विज्ञेया आश्रयस्थान भागिनः।

अयोगवाह का पाठ सामान्य वर्णमाला में नहीं होता परंतु लेखन में इनका प्रयोग होता है।

mPpkj.k LFkku

कंठ –	अ, क वर्ग, विसर्ग
तालु –	इ, च वर्ग, य, ष
मूर्धा –	ऋ, ट वर्ग, र, श
दन्त –	लृ, त वर्ग, ल, स
ओष्ठ –	उ, प वर्ग, उपूपधनीय
नासिका –	ञ, म, ङ, ण, न
कण्ठतालु –	ए, ऐ
कण्ठोष्ठ –	ओ, औ

o.kekyk

ikBxr i'u& 1-1

1. संस्कृत भाषा में स्वर क्या हैं ?
2. 'अ' कितने प्रकार का होता है
3. ऊष्मवर्ण लिखिए।
4. 'तवर्ग' में आने वाले वर्ण लिखिए।

vkiu D;k lh[kk\

- संस्कृत भाषा के वर्ष
- वर्ण के प्रकार
- उच्चारण स्थान

ikBkr i'u

1. महेश्वर सूत्र लिखिए।
2. उ के अठारह प्रकार बताईये।
3. सभी वर्णों के उच्चारण स्थान लिखिए।

mÙkjekyk

1.1

1. अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ

2. अठारह

3. ष, श, स, ह

4. त थ द ध न